Name → Maitreya Kumar Shukla.

UPSC roll no. → 0418573.

67+72

139

"सत्य सत्य होता है भले ही उस पर कोई विश्वास न करे, झूठ झूठ होता है भले ही हर कोई उसपे विश्वास करे।"

सटीक व प्रमाणिक शुरुआत

67

एच. आर. खन्ना → भारतीय न्यायपालिका की महानतम शख्सियतों में से एक हैं। 1975 में ए. डी. एम. जबलपुर वाद में जब आपातकाल के दौरान उच्चतम न्यायालय की संवैधानिक बेंच के अन्य सभी जजों ने सत्ता के सामने घुटने टेकते हुए अनुच्छेद 21 की संकीर्ण व्याख्या की तब एच. आर. खन्ना ही थे, जिनकी रीढ़ की हड्डी कड़क रही। 1975 में भले सभी लोग उनके खिलाफ थे पर आज सभी उनका

नाम पूरे सम्मान से लेते हैं तथा यह उदाहरण इस कथन की पुनर्स्थापना करता है कि → "सत्य परेशान हो सकता है, पर पराजित नहीं।"

सत्य व झूठ के अर्थ तो विश्व में सामान्य तौर पर किसी चीज को उसी रूप में प्रस्तुत करना (सत्य) या न करना (असत्य) से ही किया जाता है। हालांकि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के लिए सत्य, इससे ऊपर उठकर एक पवित्र वस्तु थी जो उनके सत्याग्रह में भी आधारभूत थी, गाँधी ने 'सत्य से बड़ा कोई ईश्वर नहीं'

प्रभावी संदर्भ

की बात करके समाज में सत्य की महत्ता को स्थापित किया

अगर हम इतिहास व वर्तमान में भी देखेंगे तो हमें ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे जो यह दिखाएंगे की किस प्रकार भले ही तत्कालीन समय में किसी ने उस पर विश्वास नहीं किया था, पर अंत में सबको मानना पड़ा कि सत्य वही है। यह चीज हमने उपनिषदों में भी कही है-

'सत्यमेव जयते' अर्थात् विजय सत्य की ही होती है। पहला उदाहरण भारत की प्रकृति अनुकूल संस्कृति का है। औद्योगिक क्रांति

के बाद जब दुनिया तीव्र भौतिक विकास के रास्ते पर आगे बढ़ी तथा पृथ्वी के अस्तित्व का उद्देश्य केवल मानव की जरूरतें पूरी करना बता दिया, तब भी भारत 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की अपनी विचारधारा के साथ ही आर्थिक विकास की बात कर रहा था, क्योंकि भारत के लोग प्राचीन काल से ही प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ सामंजस्य में रहने के आदी हैं। निश्चय ही पश्चिम के देशों ने उसे मध्यकालीन व अवैज्ञानिक माना पर आज दुनिया में जैव-विविधता हानि,

इस संदर्भ में हम जलवायु परिवर्तन पर अमेरिका, चीन तथा यूरोपीय संघ भारत का उदाहरण दे सकते हैं जैसे - डोनाल्ड ट्रंप जलवायु परिवर्तन की धारणा को स्वीकारते ही नहीं हैं जबकि भारत जैसे देश इसका परिणाम भुगत रहे हैं।

पर्यावरण प्रदूषण, वैश्विक तापन आदि ने मानव के अस्तित्व पर खतरा डाल दिया तो पश्चिम ने 'संधारणीय विकास' की अवधारणा दी जो भारतीय समाज में मूलभूत रूप से है, तथा अब भारतीय पर्यावरण अनुकूल संस्कृति के महत्व को स्वीकार किया जा रहा है।

अच्छा उदाहरण।

अगर हम 'चक दे इंडिया' फिल्म की बात करें तो उसमें भी यही बात स्थापित की गई है कि भले ही शुरुआत में सब नायक पर देशद्रोह का आरोप लगाकर उसके विरुद्ध हों पर अंत में जीत सत्य की ही होती है। दुनिया से अन्य उदाहरण

देखने पर भी यह बात स्थापित होती है। नेल्सन मंडेला व मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने भी जब नस्लभेद का मुद्दा उठाया तो सत्ता ने उनका दमन किया पर आज विश्व में नस्लवाद विरोधी मूल्यों पर सहमति (Black Lives Matter जैसे आंदोलन) तथा दोनों नेताओं का संसार भर में सम्मानित होना यही स्थापित करता है कि सत्य, सत्य ही होता है तथा अंततः दुनिया को उसे स्वीकार करना ही पड़ता है।

विषय को मनोवैज्ञानिक संदर्भों व चारित्रिक विशेषताओं से भी जोड़ें

(+) नैतिकतावली - गांधी, राजा राममोहन राय से लेकर रॉकेट साइंटिस्ट नंबूदरीपाद तक के व्यक्तित्व के सत्यता के पक्षों का वर्णन करें

भारत में सवर्ण हिंदू समाज द्वारा झूठ पर आधारित दलित शोषण व महिला शोषण का प्रचार [illegible] के झूठ का समर्थन किया जाता रहा है परंतु अंबेडकर साहब, ईश्वरचंद्र सेन, गांधी, सावित्री फुले जैसे समाज सुधारकों की वजह से यह झूठ अधिक समय तक छिपा नहीं रहा व वर्तमान में संवैधानिक आदर्शों पर समाज अग्रसर हो रहा है, जो कि सत्य है।

सत्य के अन्य विभिन्न अर्थों के संदर्भ में देखें तो भी यह व्याख्या सही प्रतीत होती है। मध्यकालीन समाज में तर्क, बुद्धि, विवेक की बात करने वाले ब्रूनो की यूरोप में तब हत्या की गई पर आज आस्था व समर्पण का भाव काम्य नहीं है जो उस समाज में माना गया था। आर्थिक संदर्भ में पूंजीवाद की चरम अवस्था, जिसमें गरीबों का स्थान नहीं था के बीच जे. एस. मिल व एच. जे. लास्की का कल्याणकारी राज्य की धारणा के साथ स्थापित होना, उस बात का प्रमाण है कि सत्य की स्थापना अंततः समाज में होगी।

अब अगर प्रश्न का दूसरा आयाम देखें तो इस तथ्य के पक्ष में भी उदाहरण कम नहीं हैं कि झूठ ने भले ही समाज को अपने पक्ष में झुका लिया हो पर अंत में वह हारा है तथा समाज ने उसका त्याग किया है।

आधुनिक इतिहास में इसका हिटलर से बड़ा उदाहरण और कौन होगा! तत्कालीन रूप में जर्मनी का अधिकांश वर्ग अंधराष्ट्रवाद से प्रेरित होकर उसको भगवान की तरह पूजने लगा था तथा आज वह जर्मनी के इतिहास में एक काले अध्याय

की तरह माना जाता है।

अन्य उदाहरण देखें तो मध्यकालीन यूरोप में ईसाई चर्चों ने जिन अंधविश्वासों तथा अवैज्ञानिक तथ्यों (जैसे - सूर्य, पृथ्वी के चारों ओर घूमता है) के दम पर कई सौ वर्षों तक दबदबा बनाए रखे उसे नवजागरण काल के वैज्ञानिकों व चिंतकों, जैसे - न्यूटन, एडीसन, आइंस्टाइन आदि ने ध्वस्त कर दिया तथा आज यह सिद्ध हो गया कि वह झूठ था। इसी प्रकार भारत में इंदिरा गांधी द्वारा आपातकाल लगाया गया तो न्यायपालिका सहित पूरा ~~के~~ सरकारी ढांचा व प्रारंभिक दौर में ज्यादातर

वर्तमान राजनीतिक स्थितियाँ इतनी हो गयी है कि जनता के समक्ष अधिकांश समय झूठ आधारित वायदे परोसे जाते हैं चाहे वह PDS से संसद तक का क्षेत्र हो परंतु कुछ वर्षों बाद इन लाभों वही उठ जाता है व सत्य वास्तविक रूप में प्रकट होता है कि— उल्लंघन [illegible] कानून का SC के निर्देशों द्वारा संतुलन

जनता उसके साथ थी, पर जयप्रकाश नारायण ने 'संपूर्ण क्रांति' के नारे के साथ दो वर्षों में ही इस के काले अध्याय को जनता के सामने रख दिया तथा आज सब उसे भारतीय लोकतंत्र का एक काला अध्याय मानते हैं।

पर जैसे कि यह तथ्य भी सर्वज्ञात है कि हर जगह आदर्श स्थापना केवल कल्पनाओं में होती है, असल ज़िंदगी ज्यादा जटिलताओं भरी है तथा वर्तमान युग में तो हम कई जगह ऐसे उदाहरण देखने को पा रहे

हैं जहाँ झूठ की लोकप्रियता व मान्यता सत्य से ज्यादा है। हाल ही में नागरिक अधिकारों की वकालत करने वाला देश अमेरिका, महिलाओं के गर्भपात के अधिकार के संवैधानिक संरक्षण को समाप्त करने को लेकर चर्चा में है। जब अर्जेंटीना जैसे तृतीय विश्व के देशों ने यह अधिकार महिलाओं को प्रदान किए हैं तब अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय का यह कदम आज भी मध्यकालीन अंधविश्वासों के बलवती होने का उदाहरण है। इसी प्रकार कई ऐसे मामले भी आज दुनिया में हैं जहाँ किसी व्यक्ति पर झूठा मामला लगाकर

* इसी तरह अनेक उदाहरण भारत में भी हैं यथा चाहे तीन तलाक की समाप्ति हो या सबरीमाला मंदिर - हाजी अली दरगाह में प्रवेश का मसला हो परंतु सत्य को हमें संवैधानिक व मानवता की कसौटी के आधार पर मापना चाहिए।

उसे अपराधी बना दिया गया। जैसा कि हम 'सेक्शन 375' नामक फिल्म में भी देखते हैं।

ज्ञानशास्त्र उदाहरण

अगर हम प्रश्न की रूढ़ और जटिलता पर गौर करें तो हम पाएंगे कि आज की भू-राजनीति में सत्य व झूठ का फासला मिट गया है। सभी पक्ष अपने को सच्चा बताते हैं। रूस का यूक्रेन पर हमला हो, नाटो का रूस को उकसाना; अमेरिका व चीन के शीत युद्ध में अन्य देशों का इस्तेमाल हो या यूरोप के देशों की पर्यावरण

पर नीतियाँ → यहाँ यह फैसला कर पाना वाकई मुश्किल है कि सच क्या है और झूठ क्या ?

इस पूरी चर्चा से स्पष्ट हुआ कि इतिहास से लेकर वर्तमान तक हमें सैकड़ों ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि सत्य सत्य ही रहता व झूठ को अंततः झूठ मान ही लिया जाता है। हालांकि वर्तमान जटिलताओं में सत्य व झूठ में स्पष्ट भेद न बचने तथा सत्य के हारने जैसी खबरें भी सामने आ रही हैं,

खाप यहां भी उदाहरण दे सकते हैं।

जो निश्चय ही उन व्यक्तियों को
विचलित कर रही हैं जो सत्य के
आदर्श पर निष्ठा रखते हैं। पर
हमें शायद भविष्य में ये
देखने को मिले की किस
प्रकार फिर इनमें से सत्य जीता
तथा ये घटनाएँ भविष्य के लिए
उदाहरण बनें कि एक समय पर
प्रचलित होने के बावजूद ये
झूठ ही थीं।

ESSAY →

"निराशा मत होइए वह प्रायः युद्ध की आखिरी ही चाबी होती है जो ताले को खोलती है।"

ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जब देहरादून में एन. डी. ए. में चयन नहीं हुआ तो वो आत्महत्या करने के विचार से गंगा के किनारे टहल रहे थे। क्या होता यदि उस दिन कलाम निराश होकर चले जाते? भारत अपना 'मिसाइल मैन' खो देता। कलाम वहाँ से आए, फिर अपनी क्षमताओं पर विश्वास किया तथा भारत को मिसाइल की दुनिया में आत्मनिर्भर तथा परमाणु संपन्न देश बना दिया। दुनिया में हजारों ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति हर युग में होते हैं जो इतिहास बदलने

अच्छी व विषय से जुड़ी भूमिका & इसमें अन्य उदाहरणों का संक्षेप में भी जिक्र कर सकते हैं

का दम रखते हैं पर एक या दो असफलताओं से ही घबराकर वो मैदान छोड़ देते हैं, क्योंकि क्षमता अकेले कुछ नहीं करेगी यदि आप में धैर्य तथा लगन (पर्जेवेरंस) का मूल्य नहीं है।

पर्जेवेरंस (लगन) से तात्पर्य किसी लक्ष्य के प्रति दृढ़ निष्ठा का होना तथा उसके लिए लगातार प्रयास करते जाना। पर यह तो संसार का नियम है कि हर काम में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं पर मानव अपने स्वभाव के अनुसार परिस्थितियों

के अधीन हो जाता है तथा निराश हो जाता है पर जो व्यक्ति असफलताओं में भी मुस्कुराता है वही निराशा के इस जाल को तोड़कर इतिहास रचता है।

अत्यंत प्रभावी वर्णन

अगर जलियावाला बाग के दमन, असहयोग आंदोलन पर हुए अत्याचार तथा आजाद हिंद फौज के सैनिकों की हत्याओं से निराश होकर हम अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार कर लेते तो आज 75 वर्ष पूर्ण होने पर हम आजादी का अमृत महोत्सव कैसे मना रहे होते। यदि व्यक्ति के अपने प्रथम प्रयास में सफल

न होने पर निराश होकर मैदान छोड़ देना नियम होता तो प्रकृति ने कहीं भी प्रयासों की अधिकतम संख्या एक ही रखी होती।

निराश न होकर लगातार आगे बढ़ते जाने तथा सफलता प्राप्त करने के कई उदाहरण हमें इतिहास से लेकर वर्तमान तक मिलते हैं। अगर इसरो के प्रारंभिक कर्मचारी यह मानकर ही निराश हो गए होते कि भारत जैसे गरीब देश में कोई नयी तकनीक कैसे आएगी तो आज मंगल ग्रह पर प्रथम प्रयास में पहुंचने का इतिहास

कौन रचता ? अगर एक बुजुर्ग व्यक्ति यह मान लेता कि अब जीवन का कोई उद्देश्य नहीं बचा तो 65 वर्ष की उम्र में वह के. एफ. सी. की स्थापना कैसे करता ?

अगर हम राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि पक्षों में भी जल्दी निराश न होकर लगे रहने व सफलता प्राप्त करने के उदाहरणों की खोज करेंगे तो वो भी पर्याप्त हैं। राजनीतिक क्षेत्र में चंद्रगुप्त मौर्य अगर तथाकथित निचली जाति से होने के कारण निराश हो जाते तो भारतीय इतिहास के सबसे बड़े साम्राज्य को हम नहीं देख पाते। इसके अतिरिक्त कुई स्था के दमन के सामने निराश हुए

1980 में चीन यदि अकाल, बेरोजगारी आदि से परेशान हो जाता तो विश्व का विनिर्माण फैक्ट्री बनने से चूक जाता।

बिना लड़ने के कारण ही फ्रांसीसी क्रांति हो पायी तथा आधुनिक लोकतंत्र के मूल्य दुनिया के सामने स्थापित हुए।

प्रवाह का स्वरूप रखे ध्यान

सामाजिक क्षेत्र में भारत की तथाकथित निम्न जाति में पैदा हुए डॉ. भीमराव अंबेडकर से बड़ा उदाहरण क्या होगा? स्कूल में कक्षा के बाहर बैठकर पढ़ने वाला बच्चा निराश नहीं हुआ इसीलिए विश्व के सबसे बड़े संविधान का निर्माता बना। इसके अलावा नेल्सन मंडेला, दशकों तक जेल में रहे पर निराशा के उस चरम में रहकर भी उन्होंने

आपने निबंध में व्यक्तिगत उदाहरणों का अच्छा प्रयोग किया है परंतु इस परिधि का विस्तार व राष्ट्र को स्वरूप करें। जैसे द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यदि जापान निराश हो गया होता तो आज विश्व को परिश्रम व शक्ति का इतना बेहतर सामंजस्य देखने को नहीं मिलता

दुनिया के सबसे बड़े रंगभेद विरोधी आंदोलन का नेतृत्व किया।

आर्थिक क्षेत्र में दुनिया में पूंजीवाद की लहर के बीच लेनिन की समाजवादी क्रांति ने दुनिया में ऐसे मूल्य दिए जिससे आज पूंजीवाद को भी कल्याणकारी राज्य की धारणा को स्वीकार करना पड़ा है। इसके अतिरिक्त विज्ञान के क्षेत्र में थामस एल्वा एडीसन का यह कथन ऐतिहासिक है – "मैं सौ बार असफल नहीं हुआ, मैंने सफल न होने के 100 कारण खोजे हैं।" एडीसन जैसा

इसी तरह समाज का उदाहरण भी दें
(i) 2nd विश्वयुद्ध के समय हिटलर के आक्रमण से लेनिन जनता टूटी ही बैठी रहती व अहिंसात्मक प्रतिरोध नहीं करती तो एक महान सुंदर व विविधता वाला समाज कैसे बनता

आत्म विश्वास यदि निराशा के उन क्षणों में किसी व्यक्ति के पास हो तो निश्चय ही दुनिया उसे याद रखेगी।

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट है कि व्यक्ति को जीवन में जल्द हार नहीं माननी चाहिए पर मानव की इस नयी पीढ़ी के साथ समस्या यह है कि इसने अपने आप को मशीन बनाने की व्यवस्थाएं कर ली है। जीवन का कोई भी क्षेत्र हो इन्होंने इतनी ज्यादा प्रतिस्पर्धा पैदा कर दी है कि अगर लगातार सफल नहीं हुए तो सबसे पीछे छूट जाने का भाव मन में आ जाता है। यही कारण है कि

आपने इसमें वर्तमान समस्याओं के उदाहरणों का अच्छा प्रयोग किया है साथ में मुहावरों के भी बनाया है

इसके (मनोवैज्ञानिक) व पर्यावरणीय प्रभाव भी ध्यान दें

यदि निराशा बढ़ती है तो अन्य नैतिक मूल्यों के ह्रास होने की संभावना रहती है वहीं इसका लाभ उठाने वाला व्यक्ति सेकुलर रहेगा

हम रोज अखबारों में कम उम्र के लोगों की आत्महत्याओं, मनोरोग से पीड़ित होने व नशे के आदी होते जाने की खबरें पढ़ते हैं। इसलिए आवश्यकता विश्व के पूरे उस मूल्य व्यवस्था को बदलने की है जिसमें जीतना व सबसे पहले जीतना ही जीवन का लक्ष्य बना दिया गया है।

साहस व दृढ़ता का उदाहरण प्रस्तुत करता है व

यदि हम व्यक्तियों को धैर्य, सहजता व सहयोग जैसे मूल्य दें तो दुनिया बदलने की क्षमता रखने वाली प्रतिभाएँ केवल एक असफलता से निराश होकर भागना बंद कर देंगी।

वहीं पर्यावरणीय पक्ष → अमृता देवी व सुंदरलाल बहुगुणा → कार्य का वर्णन

↳ नियमगिरि पर्वत में आदिवासी यदि निराश होते तो

भौतिकता की दौड़ में अपनी आस्था को गवाँ चुके होते।

धैर्य की भावना ने उन्हें सफलता के रास्ते को खोला।

इस प्रकार यह जरूर कहा जा सकता है कि व्यक्ति को जीवन में सफल होने की इच्छा रखनी चाहिए तथा यह उसे जल्द से जल्द मिले तो अच्छा है पर यदि यह जल्दी न मिले तो प्रयास छोड़कर नहीं बैठना चाहिए। बराक ओबामा 55 वर्ष की उम्र में दो बार अमेरिका के राष्ट्रपति बन कर रिटायर हुए तो अगर यह आदर्श स्थिति मान ली जाती तो उनके बाद 70 वर्ष के डोनाल्ड ट्रंप पहली बार अमेरिका के राष्ट्रपति कैसे बनते। भारतीय समाज में हमेशा से धैर्य का व

प्रभावशाली वर्णन

आधुनातन उदाहरण व लैंगिक-क्षेत्रीय संवेदनशीलता। उक्त उदाहरण देंगे तो अच्छा प्रभाव होगा

सावित्री बाई फुले का विरोध करते पत्थर उन्होंने बालिका शिक्षा हेतु विद्यालय खोला

लगन का मूल्य रहा है पिछले कुछ
दशकों से यहां भी कम हो रहा है,
इसलिए हमें नयी पीढ़ी को वे
मूल्य पुनः देने होंगे ताकि 80 साल
के कुंवर सिंह पुनः 1857 जैसी क्रांति
का नेतृत्व करने आ सकें -

"आज नहीं तो कल जरूर निकलेगा
इसी स्याह समंदर से नूर निकलेगा।"